बुढ़ापा जवानी नहीं लाता, जवानी बचपन नहीं लाती

कुदरत द्वारा बनाई इस अनमोल सृष्टि में मानवीय जीवन की रफ्तार इतनी तेज़ हो गई है कि सुबह से शाम तो क्या बचपन से पचपन तक कैसे पहुंच गए पता ही नहीं चलता वर्तमान परिपेक्ष में बढ़ती जीवन चक्र की प्रक्रिया में संघर्षों खुशियों, दुखों, रोजी-रोटी, घर परिवार, सांसारिक मोह माया इत्यादि अनेक क्रियाओं के चक्कर में अधिकतम मानवी जी ऐसे उलझ गए हैं कि उन्हें अपने शरीर,बढ़ती उम्र का तकाज़ा ही नहीं रहा! मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं कि सच्चाई यह है कि बढ़ती उम्र के साथ-साथ सतर्कता का ध्यान रखना अत्यंत ज़रूरी है।

यूं समझो बुढ़ापा जवानी नहीं, लाता जवानी बचपन नहीं लाती।इसलिए उम्र के बढ़ने के साथ सेहत में भी बदलाव आते हैं। सेहत का ध्यान रखना, फिटनेस टिप्स, घरेलू उपाय और तनाव से दूर रहना अत्यंत जरूरी है।

साथियों बात अगर हम चालीस प्लस उम्र की करें तो आपकी उम्र चालीस वें पड़ाव पर पहुंच चुकी है और चालीस की उम्र पर पहुंचने का मतलब है अपनी सेहत का पहले से अधिक ध्यान रखना। जैसे-जैसे उम्र बढ़ती रहती है वैसे-वैसे सेहत में भी बदलाव आते रहते हैं।साथियों संभव हो तो हमें निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए (1) बढ़ती उम्र के साथ-साथ शरीर में विटामिन, मिनरल्स, कैल्शियम, आयरन और एंटीआक्सीडेंट की कमी महसूस होने लगती है। इसलिए भोजन में ऐसी चीजों को अधिक शामिल करें, जो इन सभी पोषक तत्वों की आपूर्ति कर सके।(2) अत्यधि?क गुस्सा और चिंता करने से बचें, साथ ही शारीरिक श्रम भी उतना ही करें, जितना आपके स्वास्थ्य के लिए सही हो। अत्यधिक परिश्रम करने से बचें। (3) बेहतर होगा कि चालीस से अधि?क उम्र होने पर, आप अपन ी आदतों और दिनचर्या में बदलाव लाएं। इस अवस्था में आपका शरीर उतना स्वस्थ और उर्जावान नहीं होता। अपने खान-पान और दिनचर्या में बदलाव कर आप उर्जा के साथ ही लंबी उम्र भी पा सकते हैं। (4) घर पर बने पौष्टिक पूप आपकी सेहत के लिए फायदेमंद साबित हो सकते हैं। भोजन के बीच में भूख लगने पर आप इनका सेवन कर सकते हैं। (5) चालीस से अधिक उम्र वालों के लिए एंटीऑक्सीडेंट युक्त आहार लेना बेहद आवश्यक है। इसलिए हरी सब्जियां, वेजिटेबल जूस, सलाद, फल, ग्रीन-टी आदि का सेवन अवश्य करें। (6) इस समय आपके शरीर के सभी अंगों और मांसपे?शि?यों ज्यादा मेहनत करनी पड़ती है, इसलिए खान-पान को बैलेंस रखें ताकि आपका लिवर सुरक्षित रहे और शरीर से विषैले तत्वों को बाहर कर सके। (7) चालीस की उम्र के बाद अक्सर छोटी-छोटी बातों का तनाव और चिड़चिड़ापन होता है साथ ही दिमाग भी कमजोर होने लगता है। इसके लिए योगा, व्यायाम, मेडिटेशन, संगीत को अपनी दिनचर्या में शामि?ल करें। साथ ही वह काम करें जिसे करने में आपको आनंद आता है और जिसमें आपका मन लगता है। (8) साबुत अनाज को अपने भोजन में शामिल करें और फलों का भरपूर सेवन करें। इत्यादि के अलावा और भी आने की टिप्स है जिनकी सहायता से सतर्कता बरती जा सकती है।

साथियों बात अगर हम, बढ़ती उम्र के तकाजे से निपटने के लिए उपायों की करें तो, शारीरिक गतिविधि, पर्याप्त नींद, और स्वस्थ आहार अपनाना जरूरी है, साथ ही, संक्रमणों से बचने के लिए टीका लगवाना भी फ़ायदेमंद होता है। एक स्वास्थ्य संस्थान के मुताबिक, शारीरिक गतिविधि से हृदय स्वास्थ्य बेहतर रहता है और वज़न नियंत्रित रहता है--(1) बढ़ती उम्र के लक्षणों को कम करने के लिए, ये उपाय अपनाए जा सकते हैं: (2रोज़ाना दल चलें, साइकल चलाएं, या तैरें(3)योग करे (4)पर्याप्त मात्रा में पानी पिएं(5)6 से 7 घंटे की नींद लें(6)हेल्दी चीज़ें खाएं(7)नियमित रूप से एक्सरसाइज़ करे(8)टीका लगवाएंबढ़ती उम्र में स्वस्थ रहने के लिए, इन बातों का ध्यान रखना चाहिए: (1)शारीरिक गतिविधि से शरीर में ब्लड का सर्कुलेशन सही रहता है(2)पर्याप्त नींद लेने से त्वचा की डैमेज रिपेयर होती है(3)नियमित एक्सरसाइज़ से हार्ट डिज़ीज़ और कैंसर का खतरा कम होता है

4)शारीरिक गतिविधि से मूड अच्छा रहता है

(5)शारीरिक गतिविधि से हड्डियां मज़बूत होती हैं (6)पर्याप्त नींद लेने से झुर्रियां पड़ने की प्रक्रिया धीमी होती उम्र का बढ़ना जन्म से ही निर्धारित और शुरू हो जाने वाली सामान्य प्रक्रिया है जिसे रोकना असंभव है। जैसे-जैसे उम्र बढ़ती है, शरीर अपना आकार यानी लंबाई, चौड़ाई, ऊंचाई, शारीरिक गठन, मानसिक स्वास्थ्य और काम करने की ऊर्जा प्राप्त करता जाता है। बचपन, यौवन और वृद्धावस्था अर्थात शरीर का भरपूर उपयोग करने के बाद सम्पूर्ण परिपक्वता की स्थिति आती है तो यह सोच बनने लगती है कि अब बहुत हुआ, बहुत जी लिए, जो करना था या जैसी नियति या भाग्य था, वह सब कर लिया, अब शांति या मुक्ति मिले और प्रभु के चरणों में स्थान प्राप्त हो।उम्र का तकाजा बेशक हो, स्वस्थ रहकर जीना एक कला है। जैसे-जैसे उम्र बढ़ती है, शरीर अपना आकार यानी लंबाई, चौड़ाई, ऊंचाई, शारीरिक गठन, मानसिक स्वास्थ्य और काम करने की ऊर्जा प्राप्त करता जाता है। बचपन, यौवन और वृद्धावस्था अर्थात शरीर का भरपूर उपयोग करने के बाद सम्पूर्ण परिपक्वता की स्थिति आती है तो यह सोच बनने लगती है कि अब बहुत हुआ, बहुत जी लिए, जो करना था या जैसी नियति या भाग्य था, वह सब कर लिया, अब शांति या मुक्ति मिले और प्रभु के चरणों में स्थान प्राप्त हो।जीवन और मरण अपने हाथ में नहीं होने से उम्र के उस पड़ाव पर पहुंचने के बाद जिसमें करने के लिए न तो कुछ हो और न ही कुछ करने की इच्छा हो लेकिन उम्र का खाता बंद न हो रहा हो और अपने को असहाय, बेचारा समझने और दूसरों पर निर्भर रहने की स्थिति हो जाए तो मन उदास रहने लगता है, शरीर तथा मस्तिष्क दोनों ही ढीले पड़ने लगते हैं। तो क्या जीवन अगर बाकी है तो उसे आनंद लेते हुए और मनोरंजन के साथ नहीं जीना चाहिए, यह प्रश्न उन लोगों को अपने आप से करना जरूरी हो जाता है जो पहले की तरह स्वतंत्र, मुक्त और बेफिक्र होकर जिंदगी व्यतीत करना चाहते रहे हैं? सन् 1950 में जहां एक भारतीय की औसत आयु 35 वर्ष थी वहां अब यह दोगुनी होकर 70 तक पहुंच गई है। इसका अर्थ यह हुआ कि इसके बाद भी 80 से 100 वर्ष तक जीने की कल्पना की जा सकती है। इसी तरह दुनिया में ऐसे बहुत से देश हैं जिनमें औसत आयु 80-85 वर्ष है अर्थात वहां रहने वाले सौ साल से अधिक जीने के बारे में सोच सकते हैं। बढ़ती उम्र में यदि इसी सोच के साथ जीने की कोशिश की जाए कि हमारी सोच अभी भी वैसी है जैसी कि तब थी जब हम अब से आधी उम्र के थे तो वृद्धावस्था का डर नहीं रहेगा और व्यक्ति आनंदपूर्वक जी सकेगा। अपने शौक हों या कोई भूली बिसरी इच्छा हो अथवा घूमने-फिरने, नई जगहों पर जाने का मन हो, यहां तक कि अपने रिश्तों का दायरा बढ़ाने की इच्छा हो तो इस उम्र में पीछे मुड़कर न देखना और उम्र को मनोरंजन की एक शैली मानते हुए जीना ही सबसे बेहतर है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि बढ़ती उम्र का तकाजा है, बढ़ती उम्र के साथ सतर्कता का ध्यान रखना अत्यंत ज़रूरी है। बुढ़ापा जवानी नहीं लाता !!जवानी बचपन नहीं लाती,उम्र के बढ़ने के साथ सेहत में भी बदलाव आता है। सेहत का ध्यान रखने, फिटनेस टिप्स, घरेलू उपाय और तनाव से दूर रहना ज़रूरी है।

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं
गोंदिया महाराष्ट्र 9359653465

पिता की हत्या करने वाले बेटे ने कहा- सॉरी, गलती हो गई

फरवरी महीने की शुरुआत में कोरियन गेम की लत लग जाने के कारण गाजियाबाद में तीन नाबालिग सगी बहनों ने नौवीं मंजिल से कूदकर आत्महत्या कर ली थी, जिससे पूरे देश में सनसनी फैल गई थी। इसी तरह की एक रोंगटे खड़े कर देने वाली घटना फरवरी के आखिर में लखनऊ में सामने आई। यहां एक बेटे ने अपने सगे पिता को गोली मारकर हत्या कर दी, फिर शव के टुकड़े कर उन्हें एक ड्रम में भरकर ठिकाने लगाने की कोशिश की।

इंटरनेट पर रिश्तेदार की हत्या कैसे की जाए, ऐसी जानकारी देने वाली कई वेबसाइट मौजूद हैं। ऐसी ही एक साइट से शरीर काटने के औजार मंगाकर 21 वर्षीय अश्वत ने अपने व्यवसाई पिता मानवेन्द्र सिंह (50 वर्ष) की हत्या कर दी। (कुछ रिपोर्टों में अश्वत की उम्र 19 वर्ष भी बताई गई है।) अश्वत ने आनलाइन मंगाए गए औजारों से शव के टुकड़े करने की कोशिश की, लेकिन सफल न होने पर उसने लकड़ी काटने वाले उपकरणों का उपयोग किया। उसने पिता के घुटनों के नीचे दोनों पैर और दोनों हाथ अलग कर दिए तथा छाती का हिस्सा एक नीले ड्रम में भर दिया। वह उसे पास की दुकान से कुल्हाड़ी और कटर खरीदकर अंग अलग किए। छाती का हिस्सा एक नीले ड्रम में भरकर पिता की लैब में छिपा दिया।

जब वह शहर से दूर एक सुनसान जगह पर शव के टुकड़े फेंकने जा रहा था, तभी पेट्रोलिंग कर रही पुलिस ने उसे पकड़ लिया। हत्या के बाद उसने क्या-क्या किया, इसकी विस्तृत जांच जारी है, लेकिन उसने अपराध स्वीकार कर लिया है।अश्वत की मां का आठ वर्ष पहले निधन हो चुका है। उसका बड़ा भाई उत्तर प्रदेश पुलिस में कार्यरत है और उसके दादा भी पुलिस में थे। वह 'पुलिस' लिखी गाड़ी में ही शव के टुकड़े ले जा रहा था। हत्या के पीछे के वास्तविक कारणों की जांच अभी जारी है।

करने का बहुत दबाव डाल रहे थे, इसलिए परेशान होकर उसने उनकी हत्या कर दी। जानकारी के अनुसार घर में रखे लगभग 50 लाख रुपए में से कुछ रकम कम मिलने पर पिता ने उससे पूछताछ की थी, जिसके बाद अश्वत ने उन पर रिवाल्वर तान दी। जब उसने गोली चलाई, तब नीचे कमरे में मौजूद उसकी बहन ऊपर दौड़कर पहुंची। उसे देखकर अश्वत ने कहा, 'चुप रहना, मैं सब संभाल लूंगा।' उस समय उसके मन में अजीब जुनून सवार था।

यह पूरी घटना 20 फरवरी की सुबह करीब 4:30 बजे हुई। एक थ्योरी के अनुसार, पिता ने बेटे को डांटने के बाद रिवाल्वर नीचे रख दी थी। उसी मौके का फायदा उठाकर अश्वत ने रिवाल्वर उठाई और पिता के माथे पर गोली मार दी। गोली की आवाज सुनकर उसकी बहन जाग गई और ऊपर पहुंचने पर पिता को गिरा हुआ देखा। बहन कुछ बोल पाती उससे पहले ही अश्वत ने उसे चुप रहने को कहा। इसके बाद वह पिता के शव को तीसरी मंजिल से घसीटकर ग्राउंड फ्लोर पर ले आया और आनलाइन मंगाए कटर से शव काटने की कोशिश की। सफल न होने पर उसने पास की दुकान से कुल्हाड़ी और कटर खरीदकर अंग अलग किए। छाती का हिस्सा एक नीले ड्रम में भरकर पिता की लैब में छिपा दिया।

जब वह शहर से दूर एक सुनसान जगह पर शव के टुकड़े फेंकने जा रहा था, तभी पेट्रोलिंग कर रही पुलिस ने उसे पकड़ लिया। हत्या के बाद उसने क्या-क्या किया, इसकी विस्तृत जांच जारी है, लेकिन उसने अपराध स्वीकार कर लिया है।अश्वत की मां का आठ वर्ष पहले निधन हो चुका है। उसका बड़ा भाई उत्तर प्रदेश पुलिस में कार्यरत है और उसके दादा भी पुलिस में थे। वह 'पुलिस' लिखी गाड़ी में ही शव के टुकड़े ले जा रहा था। हत्या के पीछे के वास्तविक कारणों की जांच अभी जारी है।

वीरेंद्र बहादुर सिंह
नोएडा-201301 (उ.प्र.)
मो- 8368681336

उत्कर्ष स्मॉल फाइनेंस बैंक और कोटक लाइफ ने रणनीतिक साझेदारी की घोषणा की

मुंबई, उत्कर्ष स्मॉल फाइनेंस बैंक लिमिटेड ने आज कोटक महिंद्रा लाइफ इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड ('कोटक लाइफ ') के साथ एक रणनीतिक साझेदारी की घोषणा की, जो बैंक की प्रोडक्ट विस्तार रणनीति के लिए एक महत्वपूर्ण माइलस्टोन है।

यह सहभागिता उत्कर्ष स्मॉल फाइनेंस बैंक के जीवन बीमा कार्यक्षेत्र को महत्वपूर्ण रूप से मजबूत करती है, इस सहभागिता के अंतर्गत कोटक लाइफ के व्यापक उत्पाद समूहों को बैंक के 27 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में फैले 1105 बैंकिंग आउटलेट्स में जोड़ा गया है।

यह साझेदारी उत्कर्ष स्मॉल फाइनेंस बैंक के 51.4 लाख ग्राहकों को लाभान्वित करने की योजना है, जिससे कोटक लाइफ द्वारा प्रदान किए जाने वाले विभिन्न प्रकार के कस्टमाइज्ड जीवन बीमा उत्पाद और समाधान मिलेंगे, उत्पाद की इन श्रृंखला में सुरक्षा, बचत, यूनिट-लिंक्ड और रिटायरमेंट से जुड़े प्लान भी शामिल हैं।

इस साझेदारी पर बोलते हुए, उत्कर्ष स्मॉल फाइनेंस बैंक लिमिटेड के मैनेजिंग डायरेक्टर और ष्टश्वह्र, श्री गोविंद सिंह ने कहाः 'यह साझेदारी हमारे ग्राहकों को समग्र वित्तीय समाधान प्रदान करने की हमारी प्रतिबद्धता को सशक्त करती है। कोटक लाइफ इंश्योरेंस के साथ मिलकर हम एक मजबूत मंच बना रहे हैं जो प्रमुख बीमाकर्ताओं से जीवन बीमा उत्पादों की एक विस्तृत श्रृंखला तक पहुंच प्रदान करता है। यह हमारे ग्राहकों को ऐसे समाधान चुनने में सक्षम बनाता है जो उनकी व्यक्तिगत ज़रूरतों, प्राथमिकताओं और जीवन के चरणों के लिए सबसे उपयुक्त होने के साथ ही वित्तीय सुरक्षा को भी बढ़ावा देते हैं, जो उनकी अनूठी ज़रूरतों और वित्तीय लक्ष्यों के लिए सबसे उपयुक्त हो।

महेश बालासुब्रमण्यन, मैनेजिंग डायरेक्टर, कोटक महिंद्रा लाइफ इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड ने कहा, 'कोटक लाइफ में, हम दृढ़ता से मानते हैं कि जीवन बीमा हर भारतीय के लिए एक आवश्यकता है। हम 'सभी के लिए बीमा' के IRDAI के दृष्टिकोण के प्रति कटिबद्ध हैं और उत्कर्ष स्मॉल फाइनेंस बैंक के साथ हमारा सहयोग इसी दिशा में बढ़ाया गया एक सराहनीय कदम है। इस साझेदारी के माध्यम से, हमारा लक्ष्य बैंक के ग्राहक नेटवर्क और हमारी जीवन बीमा विशेषज्ञता का लाभ उठाकर आबादी के उन वर्गों तक अपनी पहुंच बढ़ाना है, जहां अभी तक पहुंच नहीं बनी है, ताकि उत्कर्ष सFBL के ग्राहकों को वित्तीय सुरक्षा प्रदान की जा सके। यह साझेदारी उत्कर्ष SFBL ग्राहकों को जीवन बीमा उत्पादों की एक विस्तृत श्रृंखला तक पहुंचने में सक्षम बनाएगी, जिसे शाखाओं, इंटरनेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग, UPI और सहायता प्राप्त-डिजिटल प्लेटफॉर्म जैसे कई चैनलों के माध्यम से वितरित किया जा सकता है।कोटक लाइफ ने 5 करोड़ से अधिक सक्रिय जीवन* को सुरक्षित किया है, जो पॉलिसीधारकों को वित्तीय सुरक्षा प्रदान करने के अपने लगातार ट्रैक रिकॉर्ड को दर्शाता है, एक आश्वासन जो अब उत्कर्ष SFBL ग्राहकों तक भी पहुंचेगा।

रमन प्रभाव और विज्ञान दिवस

देशभर में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस 28 फरवरी को मनाया जाता है। यह भारतीय भौतिकशास्त्री सर चंद्रशेखर वेंकट रमन द्वारा 'रमन प्रभाव ' की खोज की याद को स्थायी रखने के लिए मनाया जाता है।भौतिक शास्त्री सी.वी.रमन को भारत का महान अनुसंधानकर्ता कहा जाता है। सर सी.वी. रमन (चंद्रशेखर वेंकट रमन) एक महान भारतीय भौतिक विज्ञानी थे, जिनका जन्म 7 नवंबर 1888 को तमिलनाडु में हुआ था। उन्होंने 28 फरवरी 1928 को प्रसिद्ध 'रमन प्रभाव' (Raman Effect) की खोज की, जिसके लिए उन्हें 1930 में भौतिकी में नोबेल पुरस्कार मिला।

यह उपलब्धि पाने वाले वे पहले एशियाई थे। रमन को 1954 में भारत रत्न दिया गया और 'सर' की उपाधि प्रदान की गई। उन्हें 1957 में लेनिन शांति पुरस्कार मिला। यह सब सम्मान रमन इफेक्ट की खोज के कारण मिला। आइये जानते है कि रमन इफेक्ट में ऐसा क्या है और दुनिया को इससे क्या फायदा हुआ।

विश्व प्रसिद्ध भौतिक शास्त्री सर सी वी रमन ने खोज करके दुनिया को पहली बार बताया कि लाइट यानी प्रकाश हमेशा सीधी लाइन में नहीं चलता। जब प्रकाश की किरण किसी भी पारदर्शी माध्यम (पानी, कांच या कोई भी ठोस अथवा द्रव्य अथवा गैस) से गुजरती हैं तब उनके स्वभाव में परिवर्तन आ जाता है। प्रोफेसर रमन ने बताया कि प्रकाश की किरण जब माध्यम से टकराती है तो माध्यम में मौजूद कण प्रकाश की किरणों के संगठन को तोड़ देते हैं। ठीक वैसे ही जैसे कैरम बोर्ड में स्ट्राइकर, गोटियों को बिखेर देता है।

संक्षेप में कहे तो यदि रमन इफेक्ट का पता नहीं चलता तो अपन मंगल पर नहीं पहुंच पाते और शायद सेटेलाइट भी लॉन्च नहीं कर पाते। ना तो टीवी होते और ना ही मोबाइल फोन। अब पढ़िए काम की बात-प्रोफेसर रमन की खोज के बाद ही दो हजार रासायनिक यौगिकों की आंतरिक संरचना का निर्धारण किया जा सका और रमन इफेक्ट के कारण क्रिस्टल के इंटरनल

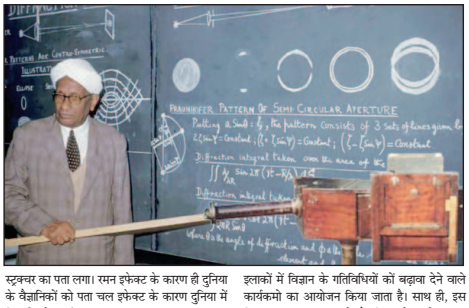

स्ट्रक्चर का पता लगा। रमन इफेक्ट के कारण ही दुनिया के वैज्ञानिकों को पता चल इफेक्ट के कारण दुनिया में कितनी खोज हुई

तरंग लम्बाइयों का यह परिवर्तन उनकी ऊर्जा में परिवर्तन के कारण होता है। ऊर्जा में बढ़ोतरी हो जाने से तरंग की लंबाई कम हो जाती है और ऊर्जा में कमी आने से तरंग की लम्बाई बढ़ जाती है।

जब हम लाल रंग के प्रकाश से बैंगनी की ओर और उससे भी आगे पराबैंगनी की ओर बढ़ते हैं, तो ऊर्जा बढ़ती है और तरंग लम्बाई छोटी होती जाती है। यह ऊर्जा सदैव निश्चित मात्रा में ही घटती-बढ़ती है तथा इसके कारण हुआ तरंग-लम्बाई का परिवर्तन सदैव निश्चित मात्रा में होता है।

अतः हम कह सकते हैं कि प्रकाश ऊर्जा-कणिकाओं का बना हुआ है। प्रकाश दो तरह के लक्षण दिखाता है। कुछ लक्षणों से वह तरंगों से बना जान पड़ता है और कुछ से ऊर्जा कणिकाओं से।रमन प्रभाव' ने उसकी ऊर्जा के भीतर परमाणुओं की योजना समझने में भी सहायता की है, जिनमें से एक रंगी प्रकाश को गुज़ार कर रमण स्पेक्ट्रम प्राप्त किया जाता है।

हर एक रासायनिक द्रव का रमण स्पेक्ट्रम उसका विशिष्ट होता है। किसी दूसरे पदार्थ का वैसा नहीं होता। हम किसी पदार्थ के रमण स्पेक्ट्रम पदार्थों को देख कर उसे पहचान सकते हैं। इस तरह रमण स्पेक्ट्रम पदार्थों को पहचानने और उनकी अन्तरंग परमाणु योजना का ज्ञान प्राप्त करने का महत्वपूर्ण साधन भी है।रमन प्रभाव विज्ञान में काफी महत्वपूर्ण खोज है।

विज्ञान दिवस के दिन देश के विभिन्न इलाकों में विज्ञान के गतिविधियों कों बढ़ावा देने वाले कार्यकमो का आयोजन किया जाता है। साथ ही, इस दिवस का लक्ष्य जनता में वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देना है।देश में पहला राष्ट्रीय विज्ञान दिवस 28 फरवरी, 1987 को मनाया गया था। भारत सरकार ने 1928 में सर सी. वी. रमन द्वारा 'रमन प्रभाव' की खोज की वर्षगांठ को मनाने के लिए 1986 में राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद (छ्रष्टस्ङ्घष्ट) की सिफारिश पर इस दिन को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के रूप में घोषित किया था।

बदलते विश्व में जहाँ वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति समाजों को नया आकार दे रही हैं, राष्ट्रीय विज्ञान दिवस कई कारणों से अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है।हमारे वैज्ञानिकों को प्रोत्साहित करता है। रमन प्रभाव की खोज का दिवस मनाने वाला एक राष्ट्रीय उत्सव हमारे राष्ट्र के पूरे वैज्ञानिक समुदाय को सम्मानित करने का दिन है। यह उन्हें अपने वैज्ञानिक प्रयासों को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित करता है।विज्ञान के बारे में जागरूकता को बढ़ावा देता है।राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह के हिस्से के रूप में आयोजित आउटरीच कार्यक्रम विभिन्न वैज्ञानिक अवधारणाओं और हाल की प्रगति की सार्वजनिक समझ को व्यापक बनाने में मदद करते हैं।

यह दिवस वैज्ञानिक स्वभाव को बढ़ावा देता है।इस दिन आयोजित विभिन्न व्याख्यानों, वाद-विवादों, प्रश्नोत्तरी और प्रदर्शनियों के माध्यम से लोगों को नवीनतम वैज्ञानिक प्रगति के बारे में शिक्षित किया जाता है और उनमें वैज्ञानिक स्वभाव और तार्किक सोच को विकसित किया जाता है। इस प्रकार, यह भारतीय संविधान के अनुच्छेद 51 में निहित एक मौलिक कर्तव्य को लागू करने में मदद करता है। विज्ञान दिवस युवा मन में जिज्ञासा जागृत करता है।विभिन्न प्रदर्शनियों, कार्यशालाओं और विज्ञान मेलों जैसी आकर्षक गतिविधियों के माध्यम से बच्चों को विज्ञान से मजेदार और इंटरैक्टिव तरीके से परिचित कराया जाता है, जिससे उनके मन में इसके लिए जुनून पैदा होता है।

भारतीय विज्ञान में प्रगति को उजागर करता है।विज्ञान दिवस पूरे भारत में विभिन्न वैज्ञानिक क्षेत्रों में नवीनतम उपलब्धियों और पहलों का प्रदर्शन करने के रूप में कार्य करता है। यह राष्ट्रीय गौरव को बढ़ावा देता है और भविष्य की पीढ़ियों को वैज्ञानिक करियर बनाने के लिए प्रेरित करता है।

अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देता है।विज्ञान को राष्ट्रीय स्तर पर मनाकर, भारत वैज्ञानिक प्रगति के प्रति अपनी प्रतिबद्धता का प्रदर्शन करता है और अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक समुदायों के साथ सहयोग के लिए द्वार खोलता है।वैज्ञानिक आधार को सशक्त करता है।भविष्य की पीढ़ियों को वैज्ञानिक प्रगति में योगदान करने और विज्ञान के माध्यम से वैश्विक चुनौतियों का समाधान करने के लिए प्रेरित करके, यह हमारे राष्ट्र के वैज्ञानिक आधार को मजबूत करता है।रमन प्रभाव की ऐतिहासिक वैज्ञानिक खोज के स्मरणोत्सव से कहीं अधिक, राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह का महत्त्व भारत की वैश्विक वैज्ञानिक महाशक्ति बनने की चल रही यात्रा को दर्शाता है। अतीत का सम्मान करके, वर्तमान का उत्सव मनाकर और भविष्य की कल्पना करके, यह भारत की वैज्ञानिक प्रगति को आकार देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह एक ऐसा दिन है जो एक बेहतर कल के लिए खोज एवं नवाचार करने की राष्ट्र की सामूहिक आकांक्षा को पुष्ट करता है, जहाँ सभी के लिए अधिक न्यायसंगत, टिकाऊ और समृद्ध दुनिया बनाने के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी का उपयोग किया जाता है।

हरीश सुवासिया
आर.ई.एस., ब्यावर राजस्थान